राष्ट्रीय कार्यशाला रिपोर्ट 09–10 सितंबर 2017

जबलपुर पब्लिक कॉलेज द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला "Preparation of Research Paper" का आयोजन Association of Teacher Educators(ATE) के सहयोग से सफलतापर्वूक सम्पन्न हुआ। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभांरभ **09.09.2017** दिन शनिवार को मुख्य अतिथि श्री कपिल देव मिश्र, कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, श्री बी. भारती रजिस्टार रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. डी. एन. सनसनवाल एवं श्री प्रवीण वर्मा कॉलेज प्रबंधक, जबलपुर पब्लिक कॉलेज के करकमलो से दीप प्रज्जवलन तथा सरस्वती वंदना के साथ हुआ। महाविद्यालय के प्रबंधक श्री प्रवीण वर्मा के द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए किया गया। विशेषज्ञों के रुप में डॉ. डी. एन. सनसनवाल, डॉ. प्रमोद नायक, श्री भूपेन्द्र निगम, प्रो.एस.के. मेहता, प्रो. जी.के जूडा, डॉ. पी. एल. मिश्रा, डॉ. दिनेश अवस्थी, कोषाध्यक्ष श्रीमती ज्योति वर्मा एवं नगर के विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य एंव प्राध्यापक मौजूद रहें। तद्पश्चात प्रो. (डॉ.) निवेदिता पॉल द्वारा कॉलेज की विकास यात्रा (1997–2017) क्रमबद्ध झलक प्रस्तुत की गयी। तद्उपरान्त इस राष्ट्रीय कार्यशाला की संयोजिका डॉ. रश्मि सिंह के द्वारा कार्यशाला के उद्देश्य व इस विषय की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी गयी। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे कुलपति महोदय जी ने मुक्तकंठो से कार्यशाला के विषय की प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा कि हम सभी को शोध कार्य की गुणवत्ता में सुधार का प्रयास करना होगा, तभी हम शोध कार्य में आई विसंगती को दूर कर पाने में सफल हो पाएगें। तद्पश्चात विश्वविद्यालय से पधारे रजिस्ट्रार डॉ. बी. भारती जी ने भी शोध की वर्तमान स्थिति में चिन्ता व्यक्त करते हुए इस कार्य को करने में पूरी ईमानदारी बरतने की प्रेरणा दी। रजिस्ट्रार बी.भारती महोदय द्वारा सस्ंथा प्रमुख श्री प्रवीण वर्मा जी को अपनी संस्था का नाम अपने पिता की स्मृति की निरंतरता बनाए रखते हुए 'शिवनारायण फाउंडेशन' रखने की पहल को सराहनीय कार्य बताया तथा साधुवाद प्रेषित किया। इसके साथ ही महाविद्यालय की प्राचार्य

डॉ. श्वेता पाण्डेय द्वारा सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रथम सत्र की समाप्ति की घोषणा की गयी।

द्वितीय सत्र का शुभारंभ ठीक 2 बजे बिलासपुर से पधारे प्रो. डॉ. प्रमोद नायक जी के उद्‌बोधन से हुआ। डॉ. नायक ने शोध पत्र लिखने की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। इसके पश्चात् शिक्षा जगत के जाने माने विद्वान श्री भूपेन्द्र निगम जी द्वारा शोध पत्र के लेखन में किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है इससे सभी को अवगत कराया गया। तद्‌पश्चात् दिल्ली से पधारे डॉ. डी. एन. सनसनवाल जी ने बहुत ही प्रभावशाली शिक्षण विधि का प्रयोग करते हुए सभी प्रतिभागियों को शोध की दुनिया में ले गए, उन्होने विचारों के आदान प्रदान से पहले शोध पत्र लेखन कार्य के समय हमें किन बातों को ध्यान मे रखकर शोधपत्र को लिखना चाहिए, इसकी सूक्ष्मतम से सूक्ष्मतम जानकारियां प्रदान की गई। उन्होनें कुछ गृहकार्य के साथ प्रथम दिन की कार्यशाला का समापन किया।

द्वितीय दिवस **10.09.2017** दिन रविवार को पुनः राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ विशिष्ट अतिथि डॉ. दिनेश अवस्थी प्रबंधक, राज्य विज्ञान संस्थान जबलपुर के करकमलों के द्वारा हुआ। इसके पश्चात् कार्यशाला एक बार फिर डॉ. सनसनवाल के मार्गदर्शन में शोध संबंधी कठिनाईयों व उसके निराकरण के द्वारा शुरू हुई। उन्होनें फिर से नई ऊर्जा का संचार प्रतिभागियों में कर उन्हें शोध विषय की बारीकियों से अवगत कर, विचारों के आदान प्रदान द्वारा कार्यशाला के वास्तविक उद्‌देश्य को सफलता तक पहुंचाया। तद्‌पश्चात् डॉ. अवस्थी ने भारतीय शोध एवं विदेशों में होने वाले शोध कार्यो पर विस्तृत चर्चा कर भारतीय शोध कार्य की गुणवत्ता में सुधार के प्रयास करने की बात पर जोर डाला। कार्यक्रम की अगली कड़ी के रूप में कार्यक्रम में पधारे प्रतिभागियों द्वारा उनके कार्यशाला संबंधी अनुभवों को प्रस्तुत किया गया, सभी ने कार्यशाला की उपयोगिता व सफलता के बारे में अपने विचार व्यक्त किये।

तद्‌पश्चात् डॉ. रश्मि सिंह द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला के समापन की बेला में भूतपूर्व छात्रा रितु दुबे द्वारा संगीतमय प्रस्तुती दी गयी। तद्‌पश्चात् प्रो. (डॉ.) निवेदिता पॉल द्वारा कार्यशाला में सहभागी प्रत्येक

सदस्य को महाविद्यालय की तरफ से सहद्य धन्यवाद ज्ञाप्ति में सहद्य धन्यवाद ज्ञापित किया तथा राष्ट्रगान के साथ ही राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन की घोषणा इसी आशा से की गयी कि सभी को इन दो दिवसीय कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों द्वारा जो मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उनका वास्तविक प्रयोग विभिन्न संदर्शक एवं शोधार्थी अपने शोध कार्यो में करें एवं शोध पत्रों की गुणवत्ता में सुधार ला सकें। साथ ही महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली शोध पत्रिका **Emerging Research Journal (**इमर्जिंग रिसर्च जर्नल**)** में भी इन विषय बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया जायें ताकि शोध पत्रिका की गुणवत्ता में भी उत्कृष्टता आ सकें तथा कार्यशाला का उद्देश्य चरितार्थ हो सकें ।